SOCIOLOGICAL PERSPECTIVES OF EDUCATION

K.K. Chauhan

(Assistant Professor)

Department of Education,

C.S.J.M. University, Kanpur

Email: aprof.kkc@gmail.com

शिक्षा के सामाजिक पारिप्रेक्ष्य

(SOCIOLOGICAL PERSPECTIVES OF EDUCATION]

- शिक्षा एक social process है।
- शिक्षा समाज में, समाज के लिए तथा समाज द्वारा (in the society, for the society and by the society) संचालित एक प्रक्रिया है।
- समाज के existence पर ही शिक्षा का existence निर्भर करता है।
- शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा की प्रकृति, शिक्षा के उद्देश्य - समाज का स्वरूप, समाज की प्रकृति और समाज के उद्देश्य पर निर्भर करते हैं।
- इसीलिए Education और Society को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

- शिक्षा Society की Needs, aspirations और ideals के आधार पर की जानी चाहिए।
- शिक्षा के द्वारा social qualities का विकास किया जाना चाहिए।
- शिक्षा के द्वारा समाज के साथ अनुकूलन करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।
- शिक्षा के objectives के निर्धारण का आधार उस समाज की संरचना और उसकी Religious, political, cultural and economical स्थिति होनी चाहिए।

- syllabus में उन्हीं Topics & Activities को सम्मिलित करना चाहिए जो
  - सामाजिक दृष्टि से useful हों
  - सामाजिकता की spirit का विकास करें
  - सामाजिक virtues (गुणों) का विकास करें
  - सामाजिक necessities (आवश्यकताएं) को पूरा करें।

इस प्रकार शिक्षा का base/foundation समाज हो। शिक्षा के द्वारा समाज का development हो सके।

शैक्षिक समाजशास्त्र

(Educational Sociology)

शिक्षा समाजशास्त्र एक संक्षिप्त परिचय
(Education Sociology : A Brief Introduction)

- एक विषय के रूप में education sociology के विकास

I. **1895 से 1945 तक:** शैक्षिक समाजशास्त्र (Educational Sociology)

II. **1945 से 1970 तक:** शिक्षा का समाजशास्त्र (Sociology of Education)

III. **1970 से अब तक:** शिक्षा का नया समाजशास्त्र (New Sociology of Education)

I. 1895 से 1945 तक: शैक्षिक समाजशास्त्र (Educational Sociology)

- प्रथम चरण में Non-sociologists (Trainers of Education Training) ने इस विषय का विकास किया।
- उनका प्रयास था कि यह sociology की ही एक Useful/ Applied branch बने।
- ताकि कक्षाओं में teaching करने वाले Teachers को अपनी Daily Educational Problems को हल करने हेतु useful guidance मिलता रहे।

II- 1945 से 1970 तक: शिक्षा का समाजशास्त्र (Sociology of Education)

- शुद्ध समाजशास्त्रियों ने Educational Sociology को cross-breed, vague, narrow प्रकार का विषय बताया।
- Educational Sociology स्थान पर 'Sociology of Education" नाम से उसके शुद्धिकरण करने का अभियान चलाया।
- इस प्रकार 1845 से Sociology of Education चल रहा है।
- जिसे समाजशास्त्री एक sociology discipline की important branch मानते हैं,
- इसे Applied Sociology नहीं मानते।
- इसने 'educational sociology के विकास के चरण को Crush, destroy या eliminate कर दिया है।
- Sociology of Education, शुद्ध समाजशास्त्र की ही रचना है।
- इसे Traditional sociology of education कहा जाता है।

III- 1970 से अब तक: शिक्षा का नया समाजशास्त्र (New Sociology of Education)

- 1970 से Sociology of Education में एक नया चरण या मोड़ आया है।
- ऐसे कुछ विद्वानों जो Philosopher, Economist, Psychologist (Not sociologist) आदि ने अपने-अपने ढंग से Education और Society से सम्बन्धित नए प्रकार के अनेक अध्ययन किए, नए thought और conclusion दिए।
- उनके योगदान को New Sociology of Education कहा जाता है।

शैक्षिक समाजशास्त्र

(Educational Sociology)

शैक्षिक समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा
(Meaning and Definition of Educational Sociolgy)

- आरम्भ में sociologists की रुचि Education के मामलों में नहीं थी, अतः उन्होंने इसमें कोई Research या लेखन कार्य नहीं किया।
- जब अमेरिका के कुछ Teacher educators का ध्यान इस New Social Sciences की ओर आकर्षित हुआ तो उन्होंने sociology के कुछ ही Concepts जैसे Socialization, Structure, function आदि को शिक्षा सम्बन्धी संदर्भों को पढ़ाने में लागू करना आरम्भ किया।

- Educational Sociology वास्तव में कोई गंभीर, पूरी तरह से विकसित और सम्मानजनक विषय नहीं बन पाया था।
- यह illegal या नाजायज प्रकार के विषय के रूप में जन्मा व विकसित हुआ।
- कोई नहीं बता सकता कि इसका जन्मदाता कौन था।
- फिर भी Payne को शैक्षिक Father of Educational Sociology माना जाता है। ।
- Sociology के क्षेत्र में इसको कोई respect नहीं मिल पाया क्योंकि किसी भी eminent sociologist ने इसके विकास में कोई contribution नहीं दिया था।

- Education and Society के घनिष्ठ संबंध ने Educational Sociology को जन्म दिया।
- Educational sociology में में शिक्षाशास्त्र और समाजशास्त्र दोनों के Principles को अपनाया जाता है।
- Educational sociology में शिक्षा के theoretical और practical दोनों पक्षों का अध्ययन करते हैं।
- Educational sociology में educational process के संदर्भ में sociological theories की व्याख्या की जाती है।

- Educational sociology में educational process को किस प्रकार चलाया जाय कि उससे social background में बालक के personality का विकास हो जाय।
- Educational sociology विद्यालय को part of society मानकर उसमें बालकों के versatile development की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।
- शैक्षिक समाजशास्त्र, Educational problems का समाधान sociological approach से करता है।

'Educational Sociology' विषय को विकासित करने वाले Educators या Teacher Educators के प्रमुख नाम—

1. Colon A. Scott: Social Education (1908)
2. Edwin A. Kirkepatric: Fundamentals of Sociology (1916)
3. Walker R. Smith: Introduction to Educational Sociology (1917)
4. Charles P. Peter: Foundation of Educational Sociology (1924)
5. George Payne: Principles of Educational Sociology (1928)
6. Ross L. Finney : Sociological Philosophy of Education (1928)
7. Francis J. Brown: Educational Sociology (1947)

E. George Payne

- Educational sociology पर systematic रूप से कार्य करने का श्रेय New York विश्वविद्यालय के Head of education department , E. George Payne को है।
- 1923 में उन्होंने अमेरिका में 'National Society for the Study of Sociology' की स्थापना की, जिसने educational sociology के developments में योगदान दिया।
- 1928 में George Payne की प्रसिद्ध पुस्तक Principles of Educational Sociology published हुई जिसमें उन्होंने कहा कि Educational sociology एक new science है।

- उन्होंने educational process की व्याख्या sociology के Principles के आधार पर की।
- उन्होंने बताया कि किस प्रकार सामूहिक जीवन पर शिक्षा और समाज का प्रभाव पड़ता है।
- 1928 से ही Journal of Educational Sociology प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ, जिसने educational sociology के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया।
- Educational sociology के विकास में Fredric, Leaplay, Moore, Merril, Maciver, Cole, Duncon, Brown, Davis, Dollard, Clark, Ottaway आदि प्रमुख हैं।

Focus Points

- Educational Sociology as a means of social progress.
- Educational Sociology as a basis for deciding the objectives of education.
- Educational Sociology as applied sociology.
- Educational Sociology as an analysis of the socializing process.
- Educational Sociology as training for educational workers.
- Educational Sociology as an analysis of the place of education in society.
- Educational Sociology as an analysis of social interaction within the school and between the school and community.

विभिन्न केन्द्रबिन्दु

- Educational Sociology as a means of social progress. यह मत Ward, Good, Ellwood व Kinneman का था।
- Educational Sociology as a basis for deciding the objectives ofeducation.यह मत Snedden, Pesen, Clements और Kinneman का था।
- Educational Sociology as applied sociology. यह मत Smith, Zorbaugh, Kalp, Leslie Zeleny का था।
- Educational Sociology as an analysis of the socializing process.यह मत Ellwood, Smith और Brown का था
- Educational Sociology as training for educational workers. यह मत Zeleny और Paney का था।
- Educational Sociology as an analysis of the place of education in society.यह आम रूप से प्रचलित मत था
- Educational Sociology as an analysis of social interaction within the school and between the school and community. यह विचार Watter, Znaniekki, Wilson, Cook और Brown का था ।

Definition of Educational Sociology

- जार्ज पेनी (George Payne) "शैक्षिक समाजशास्त्र से हमारा तात्पर्य वह विज्ञान जो संस्थाओं, सामाजिक समूहों और सामाजिक प्रक्रियाओं अर्थात् सामाजिक सम्बन्धों का जिनमें अथवा, जिनके द्वारा व्यक्ति अपने अनुभवों को प्राप्त और संगठित करता है, वर्णन और व्याख्या करता है।"

  "By educational sociology we mean the Science which describes and explains theinstitutions, social groups and social processes, that is, the social relationship inwhich or through which the individual gains and organizes his experiences."- E. Grorge Payne

- ब्राउन (Brown)- "शैक्षिक समाजशास्त्र व्यक्ति तथा उसके सांस्कृतिक वातावरण के बीच होने वाली अन्तःक्रिया का अध्ययन है।" .

  "Educational sociology is the study of the interaction of the individual and his cultural environment." -Brown

- गुड (Good)- "शैक्षिक समाजशास्त्र इस बात का वैज्ञानिक अध्ययन करता है कि व्यक्ति सामाजिक समूहों में किस प्रकार रहते हैं, वे कैसी शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा इन सामाजिक समूहों में कुशलतापूर्वक रहने के लिए उनको किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है।“

  "Educational sociology is the scientific study of how people live in social groups especially including the study of education that in obtained by the living in the social groups and education that is headed by the members to live efficiently in social groups. - Good

- रोसेक (Roucek) - “शैक्षिक समाजशास्त्र समाजशास्त्र का वह पक्ष है जो आधारभूत शैक्षिकसमस्याओं को हल करता है।"

  “Educational sociology, is sociology applied to the solution of fundamental educational problems.“ Roucek

- कार्टर (Carter)- "शैक्षिक समाजशास्त्र, समाजशास्त्र के उन तत्वों का अध्ययन करता है जिनका शैक्षिक प्रक्रिया में महत्व है और विशेष रूप से उनका अध्ययन करता है जो सीखने की महत्वपूर्ण योजना ओर सीखने की क्रिया के नियन्त्रण की ओर संकेत करते हैं। "

  "Educational sociology is the study of THore phases of Sociology that are ofsignificance for educative procerses, espacially. The study of those that porint tovaluable programme to learning and control of learning process." - Carter

- ओटावे (Ottaway)- “शैक्षिक समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो शिक्षा और समाज के सम्बन्धों का अध्ययन करता है। यह शिक्षा के उद्देश्यों, विधियों, संस्थाओं, प्रशासन और पाठ्यक्रम को उस समाज की आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक शक्तियों द्वारा निर्धारित करता है, जिसमें उसे क्रियान्वित किया जाता है। व्यक्ति की शिक्षा पर व उसके व्यक्तित्व के विकास पर सामाजिक जीवन व सामाजिक सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है।“

  "The sociology of education may be defined briefly as a study of relations between education and society. It is concerned with educational aims, methods, institutions, administration and curriculum in relation to the econimic, political, religions, social and cultural forces of the society in which they function. In the education of the individual concerns the influence of social life anddevelopment of personality."social relationship on the -Ottaway

शैक्षिक समाजशास्त्र के उद्देश्य
(Aims of Educational Sociology)

हेरिंगटन (Harington) ने शैक्षिक समाजशास्त्र के उद्देश्य बताये हैं-

- विद्यालय को influence करने वाले Social factors का अध्ययन करना
- Social factors का person पर पड़ने वाले उनके Effects को समझना
- शिक्षा के syllabus का सामाजिक दृष्टि से नियोजन करना
- society के सन्दर्भ में teacher's के work का ज्ञान प्राप्त करना
- social progress की दृष्टि से School के Functions का ज्ञान प्राप्त करना।
- Democratic principles को समझना।

शैक्षिक समाजशास्त्र की प्रकृति
(Nature of Educational Sociology)

- शैक्षिक समाजशास्त्र में society मे उत्पन्न Problems को खोजा जाता है।
- शैक्षिक समाजशास्त्र में Social problems का solution निकाला जाता हैं।
- शैक्षिक समाजशास्त्र में सामाजिक परिवर्तनों को proper direction प्रदान की जाती हैं।
- शैक्षिक समाजशास्त्र Education and Society मे एक प्रकार का Association स्थापित करता हैं।
- यह व्यक्तियों के behaviour related अध्ययन भी करता है तथा उनमें आने वाले Changes का भी शोध करता हैं।
- शैक्षिक समाजशास्त्र formal-informal दोनों Nature का होता हैं।

शैक्षिक समाजशास्त्र का शिक्षा पर प्रभाव

(Impact of Educational Sociology on Education)

Many changes in education as a result of the impact of educational sociology-

- Started a movement for democratic and public welfare education.
- Efforts made to provide compulsory and free education to children.
- Started efforts for adult education
- The government accepted the responsibility of education and took many important and useful steps.
- The government has also taken the responsibility of education for disabled and retarded children.

- Established training institutes for training of teachers.
- Emphasis on child education and child psychology
- Children should be prevented from working in factories etc.
- Vocational, technical and agricultural education was arranged by the states.
- Massive changes in all parts of education - meaning of education, objectives of education, curriculum of education, teaching method, discipline etc.

शैक्षिक समाजशास्त्र की आलोचना

- इस विषय के Teachers and supporters को प्रायः sociology के Concepts व Theories का कोई deep knowledge नहीं था।
- उनमें sociology के प्रति Attraction and passion तो थी लेकिन उनमें sociological analysis की योग्यता व कला नहीं थी।
- चूँकि ये लोग Educational Institutions से संबंधित थे अतः उनकी रुचि पाठशाला की Practical problems के हल में sociology के ज्ञान को लागू करने में ही थी।
- Research के क्षेत्र में Educational Sociologists की negligible देन रही थी। उन्होंने sociology उच्च स्तर पर पढ़ा नहीं था।
- 'Educational Sociology" शिक्षाशास्त्र विषय की branch के ही रूप में उभरा था, न कि Branch of Sociology के रूप में।

References

- Aggarwal, J. C. (2014). Philosophical and Sociological Perspectives on Education. Delhi: Shipra publication.
- Arulsamy, S. (2011). Philosophical and Sociological Perspectives on Education. Hyderabad: Neelkamal Publication Pvt. Ltd.
- Dewey, J. (1956). The school and Society. Chicago: University of Chicago Press.
- Dewey, J. (1963). Democracy and education. New York: Macmillan.
- Freire, P (1970). Cultural action for freedom. Penguin education Special, Ringwood, Victoria, Australia
- Ballantine, J. H., & Hammack, F. M. (2009). *The sociology of education: A systematic analysis* (6th ed.). Upper Saddle River, NJ: Prentice Hall.
- Freire, Paulo (1993). Pedagogy of the oppressed (revised ed.). London, UK: Penguin books.
- Ghosh, S.C. (2007) History of education in India , Rawat publications .
- Govt. of India (2009) The right of Children to free and compulsory education act 2009
- Nambisan, G.B.(2009) Exclusion and discrimination in school experiences of Dalit children , Indian institute of Dalit Studies and UNICEF.
- Pathak A. (2013) social implication of schooling; knowledge, Pedagogy and consciousness. Aakar books

- ✓ • अग्रवाल एस० के०, शिक्षा के दार्शनिक एवम समाजशात्रीय आधार आगरा भार्गव बुक हाउस ।
- ✓ • पाण्डेय, रामशकल शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमिः आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- ✓ • पाल, एस० के० गुप्त, लक्ष्मी नारायण, मदन मोहन, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, इलाहाबाद, कैलाश प्रकाशन
- ✓ • माथुर, एस० एस० शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- ✓ • लाल, रमन बिहारी: शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- ✓ • सक्सेना एन० आर० एस० शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार आगरा भार्गव बुकहाउस ।

Thank you…